दिवाकर चित्रकथा

भगवान नेमिनाथ

अंक २०
मूल्य १७.००

प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान नेमिनाथ

जैन परम्परा के २२वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) का जन्म सोरियपुर के यदुवंशी राजा समुद्रविजय जी की महारानी शिवादेवी की कुक्षि से हुआ। वासुदेव श्रीकृष्ण का जन्म समुद्रविजय के छोटे भाई राजा वसुदेव जी की रानी देवकी के गर्भ से हुआ और वसुदेव जी की बड़ी रानी रोहिणी ने बलदेव (बलराम) को जन्म दिया। इस प्रकार यदुवंश में एक ही युग में तीन महापुरुषों ने जन्म लेकर अपने अद्‌भुत लोकोत्तर कृतित्व से हरिवंश को तो गौरव मण्डित किया ही सम्पूर्ण भारतीय जन-जीवन को भी धर्मानुप्राणित कर दिया।

भगवान नेमिनाथ जहाँ अद्‌भुत पराक्रमशाली एवं शौर्य-तेज के पुँज थे वहीं परम करुणामूर्ति भी थे। उनका जीवन सांसारिक मोह एवं विकारों से निर्लेप कमल के समान पवित्र था। तो करुणा व अहिंसा की शीतलवाहिनी गंगा के समान लोक-कल्याणकारी भी था। शासक यादव जाति को शिकार व माँस-मदिरा सेवन के दुर्व्यसनों से मुक्त कराने और शील-सदाचार की ओर मोड़ने में उनका योगदान चिरस्मरणीय है। केवल वाणी द्वारा ही नहीं, किन्तु अपने आत्म बलिदानी व्यवहार से भी उन्होंने तत्कालीन मानव समाज को जीव-दया व शाकाहार का सन्देश दिया। वासुदेव श्रीकृष्ण उनके इन उपदेशों को यादव जाति व तत्कालीन समाज में प्रचारित करने में विशेष सहयोगी रहे। यही कारण है कि जैन साहित्य के अलावा वैदिक साहित्य में भी भगवान अरिष्टनेमि के उपदेशों व धर्म-प्रचार का प्रशंसात्मक उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में तो उनको अध्यात्म वेद को प्रकट करने वाले सब जीवों का मंगल करने वाले मानकर उनके प्रति यज्ञाहुति समर्पित करने के मंत्र भी हैं। प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. राधाकृष्णन ने उन्हें स्पष्ट ही ऐतिहासिक महापुरुष स्वीकार किया है।

भगवान नेमिनाथ की जीवन घटनाओं का वर्णन जैन आगमों व उत्तरवर्ती टीका ग्रन्थों, चरित्र ग्रन्थों आदि में विस्तार पूर्वक मिलता है। यद्यपि परम्परा भेद के कारण कुछ प्रसंगों के वर्णन में सामान्य-सा अन्तर अवश्य आता है किन्तु उनके अहिंसा-करुणामय जीवन आदर्शों को सभी ने बड़ी श्रद्धा के साथ चित्रित किया है। भगवान नेमिनाथ के साथ राजीमती का चरित्र चित्रण जैन साहित्य में बड़ी रसमय शैली में किया गया है। राजीमती के पवित्र अनुराग में त्याग और बलिदान की, शील और सद्‌विवेक की एक अद्‌भुत प्रेरणा शक्ति भरी हुई है। यहाँ पर संक्षिप्त में भगवान नेमिनाथ के पावन जीवन चरित्र को शब्दांकित किया है आचार्यश्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी के विद्वान शिष्य मुनिश्री पूर्णचन्द्र विजय जी ने।

-महोपाध्याय विनयसागर *-श्रीचन्द सुराना 'सरस'*

लेखन : *मुनि श्री पूर्णचन्द्र विजय जी*

सम्पादक : *श्रीचन्द सुराना 'सरस'* प्रबन्ध सम्पादक : *संजय सुराना* चित्रण : *श्यामल मित्र*

प्रकाशक	
दिवाकर प्रकाशन	**श्री देवेन्द्र राज मेहता**
ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने	सचिव, प्राकृत भारती अकादमी
एम. जी. रोड, आगरा-282 002	3826, यती श्यामलाल जी का उपाश्रय
दूरभाष : (नि.) 351165, (का.) 51789	मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर-302 003

मुद्रण एवं स्वत्वाधिकारी : संजय सुराना द्वारा दिवाकर प्रकाशन, ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-2 के लिए ग्राफिक्स आर्ट प्रेस, मथुरा में मुद्रित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान नेमिनाथ

यमुना नदी के तट पर सोरियपुर नाम का विशाल नगर था। यहाँ पर हरिवंश के वृष्णि कुल में जन्मे दो राजाओं का राज्य था। सोरियपुर के उत्तर-पूर्व के शासक समुद्रविजय थे जिनकी पटरानी का नाम था शिवादेवी। दक्षिणी-पूर्व भाग पर राजा वसुदेव जी का राज्य था। इनकी दो रानियाँ थीं रोहिणी और देवकी। वसुदेव जी की बड़ी रानी रोहिणी के पुत्र थे बलराम। छोटी रानी देवकी के पुत्र थे श्रीकृष्ण।

यह कहानी श्रीकृष्ण के चचेरे भाई भगवान नेमिनाथ के जीवन-वृत्त पर आधारित है जिन्होंने महान् पुण्य कर्म कर बीस स्थानकों की उपासना करके पिछले जन्म में तीर्थंकर गोत्र कर्म का बन्ध किया और स्वर्ग में अपराजित विमान में देव बनें।

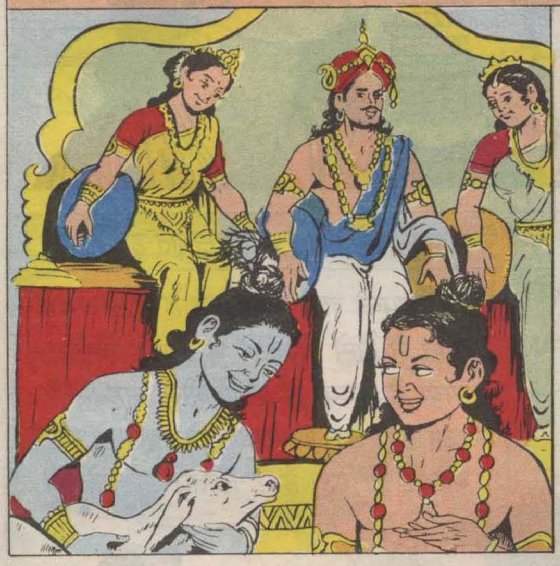

एक दिन स्वर्ग के सबसे ऊँचे अपराजित देव विमान में इस महान् पुण्यात्मा देव का आसन डोलने लगा। उन्होंने भविष्य के गर्भ में देखा–

उन्होंने स्वर्ग से माता को प्रणाम किया।

माता शिवादेवी महलों में सोयी हुई थीं। कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी की मध्यरात्रि में स्वर्ग से प्रयाण कर देव की भव्य आत्मा माता शिवादेवी के गर्भ में अवतरित हुई। एक साथ अनेक दिव्य स्वप्न उनकी आँखों में तैरने लगे। हाथी, सिंह आदि एक-एक करके १४ स्वप्न माता को दिखाई दिये। वे नींद से उठकर सोचने लगीं–

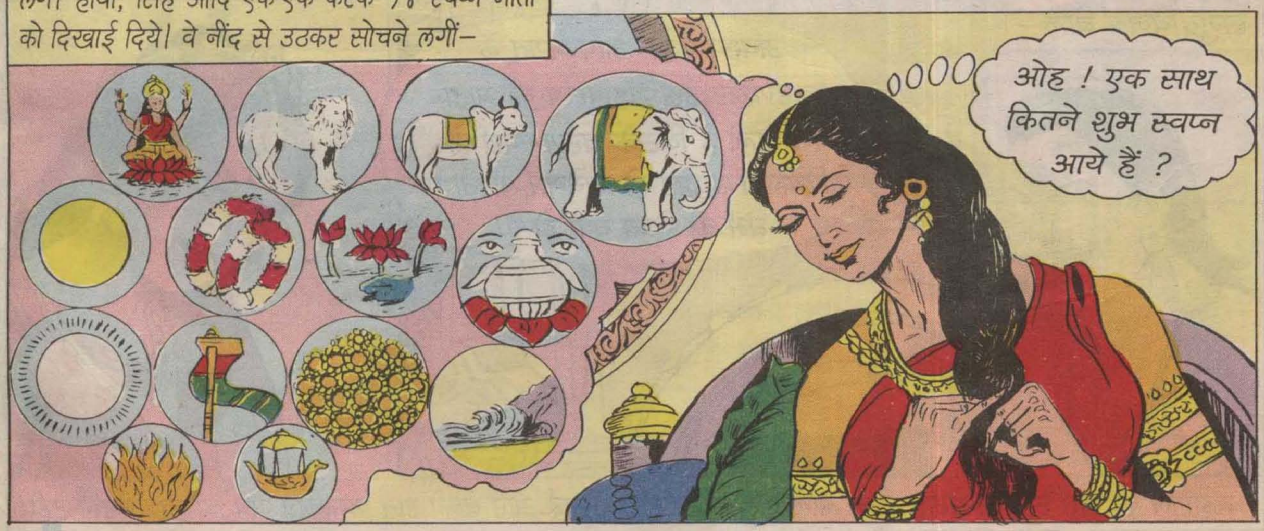

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकाश-मंडल में स्थित स्वर्ग के देव-देवेन्द्र-बृहस्पति आदि माता शिवादेवी को नमस्कार करने लगे।

हे माता ! धन्य हैं आप ! आपके उदर से जगत् के तारणहार २२वें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म होगा, समूचे संसार में धर्म का प्रकाश फैलेगा।

serving jinsh
07388
gyanmandir@k

रानी उठी और पास के कक्ष में सोये महाराज समुद्रविजय के पास आई। रानी के आने की आहट से महाराज की नींद उचट गई। महाराज ने पूछा–

महारानी ! आप ! इस मध्यरात्रि में ..... ?

रानी शिवादेवी ने महाराज को अपने स्वप्न सुनाते हुए कहा–

क्या आपको नहीं लग रहा है इस अँधेरी रात में जैसे दिशाओं में प्रकाश बिखर गया है। हवा में भीनी-भीनी महक-सी आ रही है। आसमान से खुशियों की बौछारें हो रही हैं ? सितारे गा रहे हैं।

समुद्रविजय बोले–

अवश्य ! ही आप जगत् के तारणहार उस महापुरुष की माता बनने वाली हैं जिसके चरण-स्पर्श से ही पापियों का उद्धार हो जायेगा। धरती पर धर्म की दिव्य वर्षा होगी।

महाराज की बात सुनकर प्रसन्न रानी अपने कक्ष में वापस आ गई और बाकी रात णमोकार मंत्र का जाप करती रही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गर्भ के नौ मास पूरे होने पर श्रावण सुदि पंचमी के दिन रानी शिवादेवी ने एक सूर्य जैसे प्रकाशपुंज रूपी बालप्रभु को जन्म दिया। राजभवन का कौना-कौना उस प्रकाश से जगमगा उठा। स्वर्ग से ६४ इन्द्र और हजारों देव-देवियाँ माता शिवादेवी की वन्दना करने आये।

देवेन्द्र ने बालक का एक अन्य प्रतिरूप बनाकर माता के पास सुला दिया।

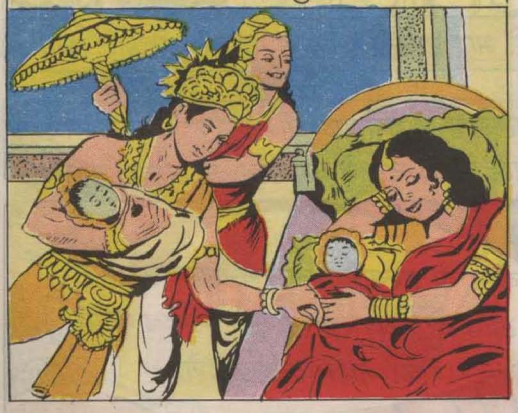

और बाल-प्रभु को अपने हाथों में उठाकर मेरुपर्वत के शिखर पर ले आये। अपने पाँच दिव्य रूप बना कर देवेन्द्र ने भगवान का जन्म अभिषेक किया।

बारहवें दिन महाराज समुद्रविजय ने एक विशाल प्रीतिभोज का आयोजन किया और घोषणा की–

एक आचार्य का कहना है, बालक का नाम इन्द्र ने 'नेमिकुमार' रखा, वे अरियों-शत्रुओं को भी प्यारे इष्ट लगते थे इसलिए उनका नाम अरि-इष्ट अरिष्ट प्रसिद्ध हो गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालक अरिष्टनेमि का शरीर बड़ा सुगठित और सुडौल था। शरीर का रंग हलका नीला श्याम छवि वाला था। उनकी छाती पर श्रीवत्स का चिह्न देखकर लोग कहते–

अरिष्टनेमि धीरे-धीरे नेमिकुमार नाम से प्रसिद्ध हो गये।

नेमिकुमार के पश्चात् रानी शिवादेवी ने और तीन पुत्रों को जन्म दिया। जिनके नाम थे– रथनेमि, सत्यनेमि और दृढ़नेमि।

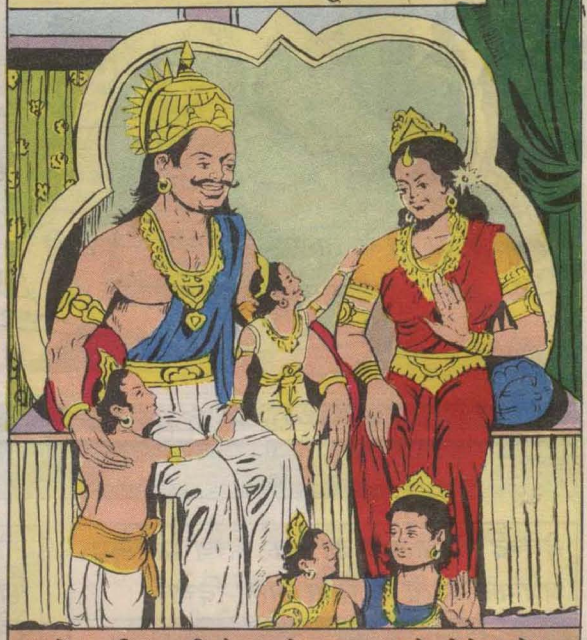

चारों भाई राजसी वैभव में पलकर बड़े होने लगे।

मगध का क्रूर शासक जरासंध यादव वंश के साथ गहरी शत्रुता रखता था। जब कृष्ण के हाथों अपने दामाद कंस के वध की खबर उसके पास पहुँची तो उसने अपनी बेटी जीवयशा के सामने प्रण किया–

जरासंध ने सोपाक नामक दूत समुद्रविजय के पास भेजा। दूत ने जरासंध का सन्देश सुनाया–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुद्रविजय ने कहा–

कंस स्वयं हत्यारा और अपराधी था। अपराधी को दण्ड देना हमारा कर्त्तव्य है। श्रीकृष्ण ने जो किया वह बिल्कुल ठीक किया है।

सोपाक दूत ने लौटकर जरासंध को भड़काया। जरासंध ने अपने पुत्र कालकुमार को आदेश दिया–

तुम सेना लेकर जाओ और यादवों को कुचल डालो। परन्तु सावधान रहना, कृष्ण बहुत चतुर छलिया है।

पिताश्री ! आप चिंता न करें, यदि वह अग्नि में भी प्रवेश कर गया होगा तब भी मैं उसे निकाल कर मार डालूँगा।

कालकुमार विशाल सेना लेकर श्रीकृष्ण को मारने चल दिया।

इधर समुद्रविजय वसुदेव जी आदि ने निमित्तज्ञ (ज्योतिषी) को बुलाकर पूछा–

जरासंध के साथ हमारी शत्रुता बंध गई है इसका अन्त कब होगा.....

महाराज ! यह सत्य है कि बलराम-श्रीकृष्ण महान् पराक्रमी हैं। जरासंध को मार कर ये तीन खण्ड के अधिनायक बनेंगे, किन्तु अभी आपका इस प्रदेश में रहना ठीक नहीं है।

निमित्तज्ञ ने कहा–

यहाँ से पश्चिम दिशा में समुद्र की ओर आप सपरिवार चले जायें। मार्ग में जहाँ सत्यभामा दो पुत्रों को जन्म देगी वहीं पर नगरी बसा लें। शत्रु आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निमित्तज्ञ के कथन का श्रीकृष्ण ने समर्थन किया—

अभी हमें नर-संहार से बचकर नव-निर्माण करना है और इसके लिए शान्ति की जरूरत है।

ठीक है, सब यादव वंशी अपने-अपने परिवारों के साथ पश्चिम दिशा में प्रस्थान करें।

सभी यादवों ने पश्चिम दिशा की तरफ प्रस्थान कर दिया।

कालकुमार विशाल सेना के साथ कृष्ण-बलराम का पीछा करता हुआ पश्चिम विंध्याचल के जंगलों में पहुँच गया। श्रीकृष्ण के सहायक एक देवता ने कालकुमार को रोकने के लिये माया रची। कालकुमार ने देखा— नदी किनारे एक किले के पास जगह-जगह पर चिताएँ जल रही हैं। एक बुढ़िया चिता के पास बैठी रो रही है। उसने बुढ़िया से पूछा—

यह क्या है ? किसकी चिताएँ हैं?

क्या बताऊँ..... कालकुमार के भय से बलराम-श्रीकृष्ण और सब यादव यहाँ जलकर मर गये। अब मैं भी इस चिता में जलकर मरूँगी।

बुढ़िया रूपी देव ने रोते-रोते बताया।

कालकुमार गर्व से सीना तानकर बोला—

कृष्ण छलिया जरूर मेरे भय से अग्नि में छुपा है' अभी मैं पकड़ कर लाता हूँ। बता, कृष्ण की चिता कौनसी है?

यही है।

कालकुमार उस जलती चिता में कूद गया और अग्नि में जलकर भस्म हो गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ देर बाद देवता ने अपनी माया समेट ली। वहाँ न चिता थी न किला और नही बुढ़िया। कालकुमार की सेना ने जरासंध के पास आकर सारी घटना सुनाई तो जरासंध दुःख से पागल होकर सिर पीटने लगा।

श्रीकृष्ण के नेतृत्व में यादवों की सेना आगे बढ़ती हुई रैवतक पर्वत की तलहटी में पहुँची। वहाँ पर सत्यभामा ने दो तेजस्वी पुत्रों को जन्म दिया। श्रीकृष्ण ने अष्टम तप करके सुस्थित देव की आराधना की, देव उपस्थित हुआ–

देवता ने नौ योजन लम्बी और बारह योजन चौड़ी एक सुन्दर नगरी का निर्म्माण कि्या। जो द्वारका के नाम से प्रसिद्ध हुई।

इधर जरासंध ने अपार सेना लेकर द्वारका की तरफ प्रस्थान कर दिया। नारद जी श्रीकृष्ण की सभा में समाचार लेकर आ पहुँचे। श्रीकृष्ण ने नेमिकुमार से पूछा–

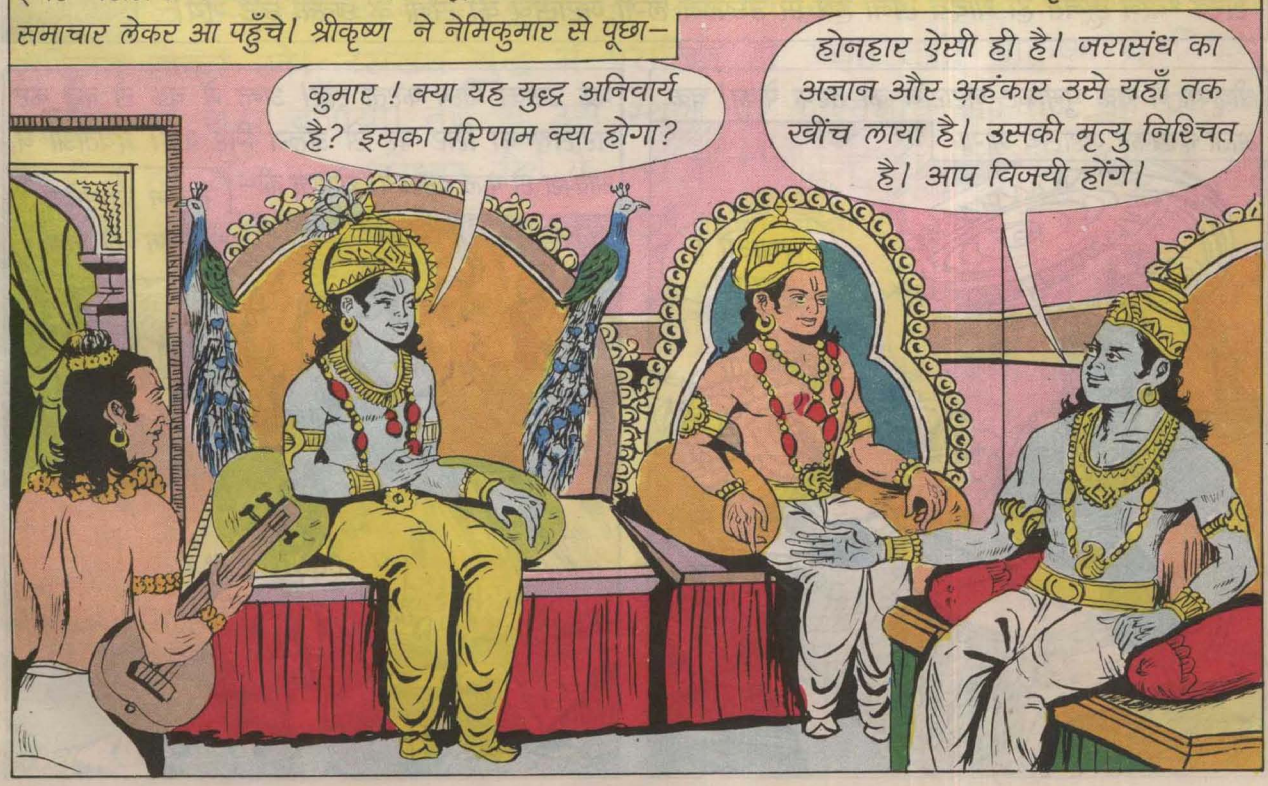

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलराम श्रीकृष्ण के साथ नेमिकुमार भी रथ पर आरूढ़ होकर युद्ध के लिए चल पड़े। भयंकर युद्ध में जरासंध ने बलराम पर गहरा प्रहार किया। बलराम भूमि पर गिर पड़े। तब श्रीकृष्ण ने जरासंध के साथ घमासान युद्ध किया। जरासंध की सेना ने श्रीकृष्ण को चारों ओर से घेर लिया और शोर मचा दिया कृष्ण मर गये। यादव सेना में खलबली मच गई। तभी रथ पर बैठे नेमिकुमार आगे आये और उन्होंने इन्द्र द्वारा दिया हुआ शंख बजाया।

शंख ध्वनि सुनते ही यादव सेना हर्ष से उछलने लगी, जरासंध की सेना के छक्के छूट गये।

श्रीकृष्ण ने चक्र घुमाकर जरासंध की तरफ फेंका। चक्र आता देखकर जरासंध भागा-

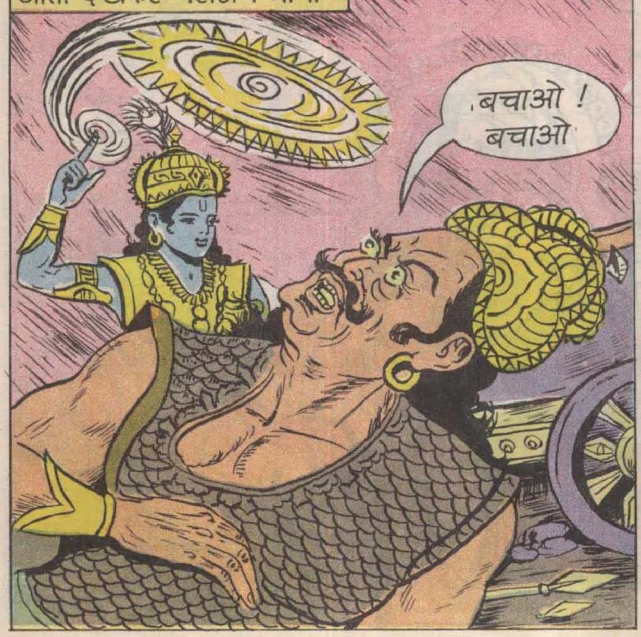

चक्र उसका पीछा करता रहा। अन्त में चक्र से कट कर जरासंध का सिर धड़ से अलग गिर पड़ा। देवताओं ने आकाश से फूल बरसाये। घोषणा की–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जरा विद्या का विनाश और शंखेश्वर महातीर्थ की उत्पत्ति

जरासंध के साथ युद्ध में भगवान नेमिनाथ ने जब शंखध्वनि की तो जरासंध की सेना के छक्के छूट गये। वहीं यादव सेना में हर्ष और उल्लास का संचार हो गया। इस प्रसंग के साथ कुछ प्राचीन चरित्रों में एक महत्त्वपूर्ण घटना का भी वर्णन है जो इस प्रकार है–

जरासंध ने यादव सेना को जीतने के लिए उस पर जरा नामक दुष्ट विद्या छोड़ी। जिसके दुष्प्रभाव से यादव सैनिक मूर्च्छित और जरा-जीर्ण होकर निस्तेज हो गये। श्रीकृष्ण ने यह देखा तो चिंतित हुए। श्री नेमिकुमार के निर्देशानुसार अट्ठम तप किया तब भगवान पार्श्वनाथ की एक दिव्य मूर्ति पाताल से प्रगट हुई। माता पद्मावती ने दर्शन देकर बताया–"अतीत की चौबीसी में दामोदर नामक नवम तीर्थंकर के समय में अषाढ़ी नामक श्रावक ने यह मूर्ति भराई थी, इस मूर्ति का स्नात्र-प्रक्षाल जल सेना पर छिटकाव करो।" पद्मावती देवी के कथनानुसार श्रीकृष्ण ने मूर्ति का स्नात्र-प्रक्षाल जल सेना पर छिटका तो दुष्ट जरा विद्या का दुष्प्रभाव दूर हुआ। सभी सैनिक सज्जित होकर उठे। जरासंध युद्ध में पराजित हो गया। तभी श्रीकृष्ण ने विजय उल्लास में शंख बजाया। तब से उस स्थान पर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित हुई और वह शंखेश्वर तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। शंखेश्वर महातीर्थ की वह मूर्ति आज भी इस दिव्य महिमा से मंडित मानी जाती है।

आधार–आचार्य श्री जिनप्रभ सूरी रचित (१४वीं शताब्दी)
विविध तीर्थ कल्प, पार्श्वनाथ कल्प

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जरासंध को मरा देखकर उसके साथी भयभीत अनेक राजा नेमिकुमार की शरण में आये। नेमिकुमार शत्रु पक्ष के राजा व जरासंध के पुत्रों को साथ लेकर वासुदेव श्रीकृष्ण के पास आये।

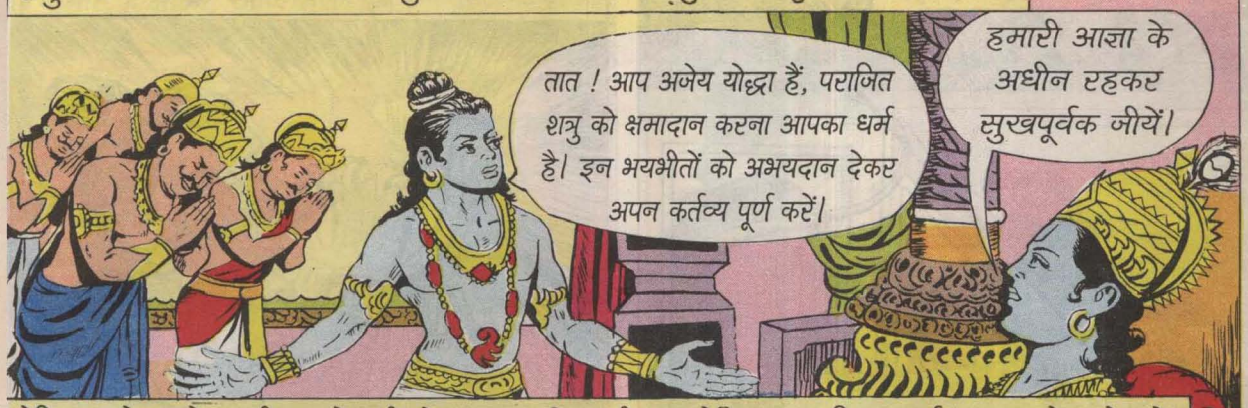

नेमिकुमार के कहने पर श्रीकृष्ण ने सभी को अभयदान दिया। श्रीकृष्ण, नेमिकुमार आदि सुखपूर्वक द्वारका में रहने लगे।

नेमिकुमार अब युवा हो चुके थे। एक दिन घूमते हुए वासुदेव श्रीकृष्ण की आयुधशाला में पहुँच गये। वहाँ पर विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र देखने लगे। आयुधशाला के रक्षक ने बताया–

नेमिकुमार मुस्कराये और उन्होंने सुदर्शन चक्र अंगुली पर उठाकर खूब वेग से घुमाया। आयुधरक्षक आश्चर्यचकित देखता रहा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर नेमिकुमार ने आगे बढ़कर शार्ङ्ग धनुष उठाया और रबर की नली की तरह मोड़ दिया।

और पाँच जन्य शंख हाथ में लेकर बजाया तो उसकी प्रचण्ड ध्वनि से दिशाएँ गूँज उठीं।

द्वारिका राजसभा में बैठे वासुदेव श्रीकृष्ण चौंक पड़े। वे सीधे दौड़कर आयुधशाला में आये। उन्होंने पूछा—

कुमार ! यह शंख किसने फूँका?

मैंने आपका शंख उठाया और क्रीड़ा करते हुए फूँक डाला। पर, आप यों घबराये हुए क्यों हैं?

श्रीकृष्ण कुमार को बाहुओं में लपेटकर हँसते हुए बोले—

आश्चर्य, तुमने यह शंख बजाया? फिर— मेरा भाई ! मुझसे भी प्रचण्ड पराक्रमी है ! वाह !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीकृष्ण नेमिकुमार के बल की परीक्षा लेने के लिए बोले–

कुमार ! आओ, आज हम बाहुयुद्ध करके देखे, कौन अधिक पराक्रमी है?

श्रीकृष्ण मुझसे बड़े हैं। बड़े भाई तो पिता तुल्य पूज्य होते हैं। इनसे बाहुयुद्ध करना उचित नहीं?

नेमिकुमार सोचने लगे।

फिर वे श्रीकृष्ण से बोले–

तात ! पहलवानों की तरह मल्ल युद्ध करके धूल में लोटना हमें शोभा नहीं देता। मैं जानता हूँ आप मेरी बल-परीक्षा करना चाहते हैं?

श्रीकृष्ण भी मुस्कराये–

हाँ, तुम ठीक कहते हो बंधु, क्या वास्तव में ही तुम में इतना प्रचण्ड पराक्रम है?

नेमिकुमार ने कहा–

आप जरा अपनी भुजा लम्बी कीजिये।

श्रीकृष्ण ने अपनी भुजा फैलाई नेमिकुमार उस पर जैसे ही झूमने लगे, श्रीकृष्ण की भुजा नीची झुक गई।

ओह.....

फिर नेमिकुमार ने अपनी भुजा फैलाकर कहा–

तात ! आप भी झूम कर देखें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीकृष्ण नेमिकुमार की भुजा पकड़कर झूमने लगे परन्तु वह पत्थर के खम्भे की तरह सीधी ही तनी रही।

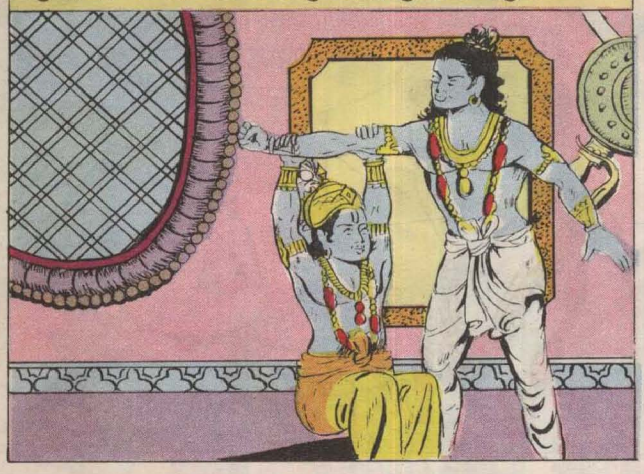

यह देखकर श्रीकृष्ण चिन्तातुर होकर सोचने लगे

तभी आकाश-वाणी हुई–

आकाशवाणी सुनते ही श्रीकृष्ण की सोच बदली, वे सोचने लगे–

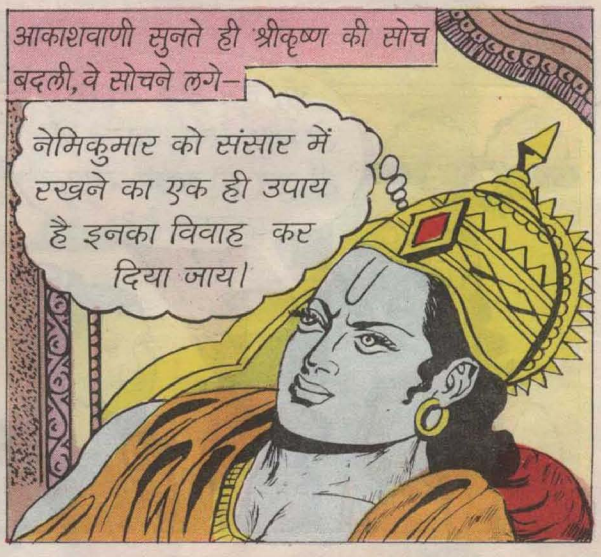

एक दिन मौका देखकर श्रीकृष्ण बोले–

श्रीकृष्ण उसे समझाते हुए बोले–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिकुमार बोले–

तात ! जिसके मन में भोगों की रुचि होती है उसे संसार सुखमय लगता है, किन्तु विरक्त आत्मा को तो ये भोग जहर के समान कड़वे और कारागार के तुल्य बंधन प्रतीत होते हैं?

श्रीकृष्ण–

कुमार ! मैं संसार की श्रेष्ठतम सुन्दरी से तुम्हारा विवाह कराना चाहता हूँ जिसे पाकर तुम संसार का आनन्द भोग सको।

तात ! दो देहों का मिलन क्षणिक आनन्द के बाद दीर्घकाल तक दुःखदायी होता है, मैं तो उस मार्ग पर चलना चाहता हूँ जिसमें सदा आनन्द ही आनन्द हो।

श्रीकृष्ण ने सोचा–

नेमिकुमार संसार से विरक्त हैं। इन्हें विवाह के लिए मनाना सरल नहीं।

श्रीकृष्ण इसी विषय में सोचते हुए अपने महलों में आ गये। सत्यभामा, रुक्मिणी आदि ने पूछा–

स्वामी ! आज आप विचार-मग्न दिख रहे हैं। क्या बात है?

श्रीकृष्ण हँसकर बोले–

ज्येष्ठ पिता समुद्रविजय जी आदि सब की इच्छा है कि नेमिकुमार को विवाह के लिए मनायें, परन्तु वह नहीं मान रहे हैं।

सत्यभामा हँसकर बोली–

यह काम हम पर छोड़ दीजिये ! मेरी छोटी बहन राजीमती का अद्‌भुत रूप-सौन्दर्य देखकर नेमिकुमार अवश्य राजी हो जायेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार फागुन का महीना था। श्रीकृष्ण और नेमिकुमार, सत्यभामा, रुक्मिणी आदि रानियों के साथ जल क्रीड़ा करने गये। सरोवर का केसरिया जल पिचकारियों में भरकर सत्यभामा, रुक्मिणी नेमिकुमार के ऊपर उछालने लगी। रानी जाम्बवती और पद्मावती ने फूलों की गेंद बनाकर नेमिकुमार की छाती पर फेंकी। कुमार हँसते हुए बोले–

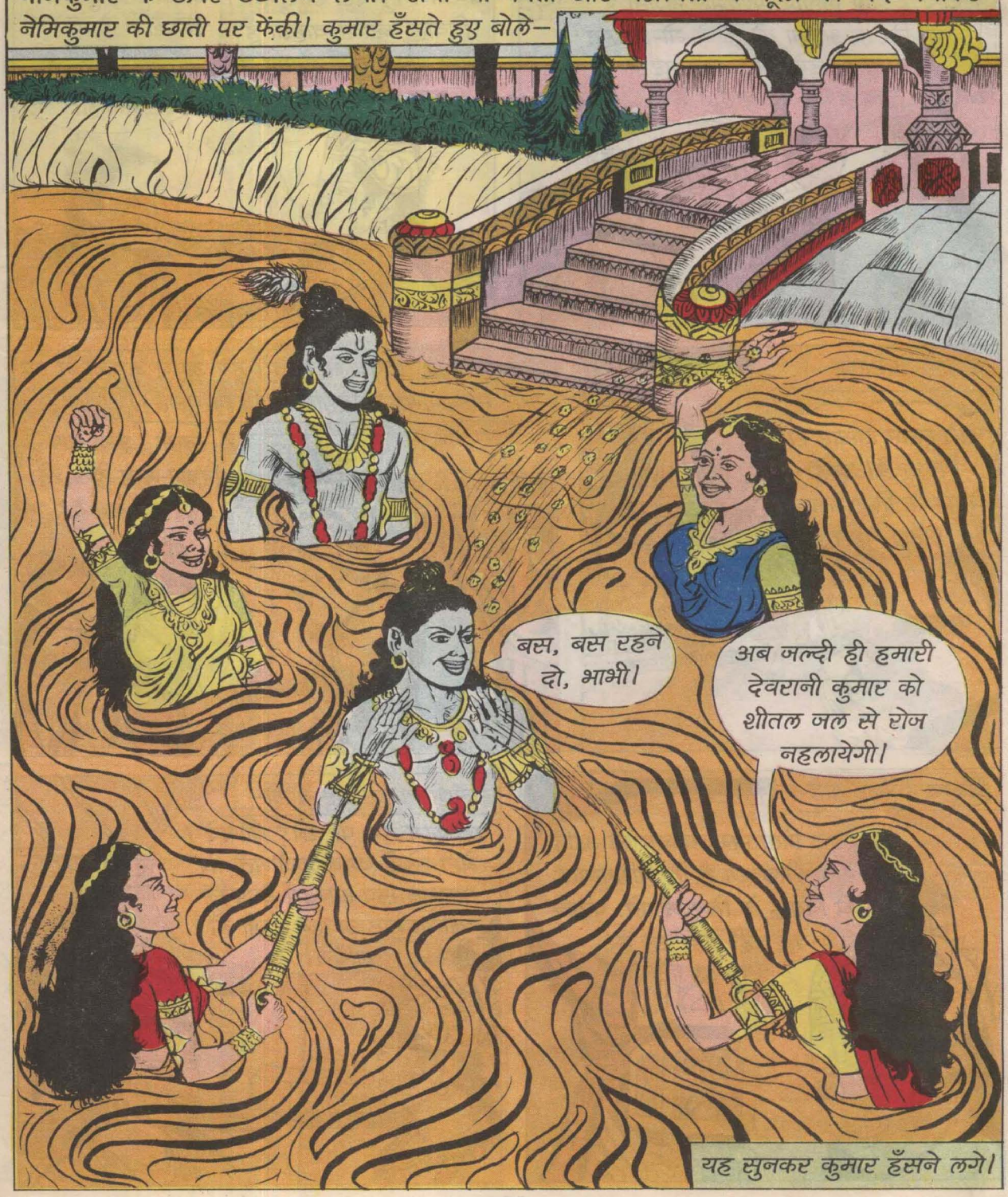

यह सुनकर कुमार हँसने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथी को वापस जाते देख रानियों ने इसे विवाह की स्वीकृति क्या होकर कहने लगीं–

ह' विवाह: ी हो गये, न गये।

अब मैं कुमार के लिए शीघ्र ही श्रेष्ठ राज कन्या लावूँगा।

नेमिकुमार सोचने लगे।

मोह की लीला कितनी विचित्र है जिस विवाह को मैं बेड़ी मानता हूँ, उसको आनन्ददायक मानकर मुझे बांधना चाहते हैं।

दूसरे दिन श्रीकृष्ण नेमिकुमार के विवाह का प्रस्ताव लेकर राजा उग्रसेन के पास आये–

मैं अपने छोटे भाई नेमिकुमार के लिए आपकी कन्या राजीमती का हाथ माँगने आया हूँ।

हमारे लिए इससे बढ़कर हर्ष की बात क्या होगी ? परन्तु हम चाहते हैं नेमिकुमार की बरात लेकर आप हमारे दरवाजे पर आयें।

श्रीकृष्ण बोले–

ठीक है, ऐसा ही होगा आप तैयारी करें।

द्वारिका में अब नेमिकुमार के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आज द्वारिका के घर-घर में मंगल दीप जल रहे थे। तोरणों पर बंदनवारे लटक रहे थे। श्रीकृष्ण वासुदेव के गंधहस्ती पर नेमिकुमार वरराजा बनकर बैठे और पीछे घोड़ों, रथों पर तथा पैदल सैकड़ों यादव चल रहे थे।

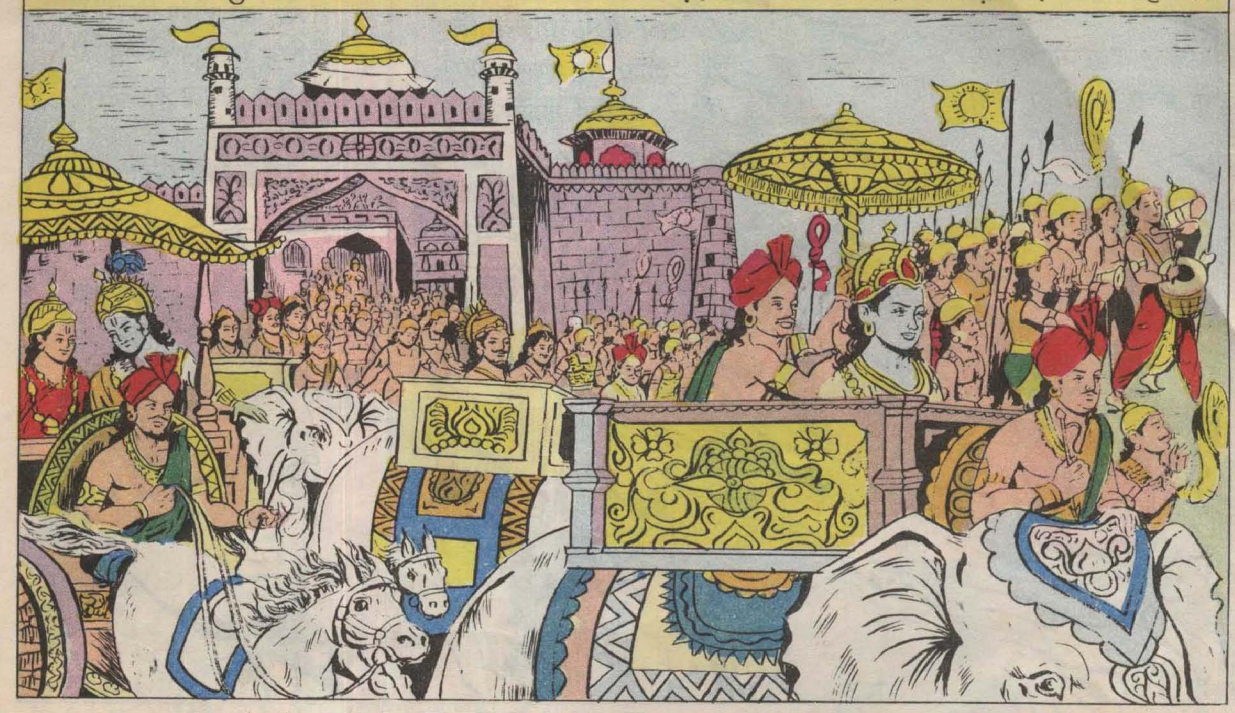

दूर ऊँची पहाड़ी पर विशाल राज भवन की छत पर अनेक महिलाओं से घिरी सजी हुई राजीमती दुल्हन बनकर हाथ में वर माला लिए खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। राजुल की दो सखियाँ नेमिकुमार को देखकर आपस में बातें करने लगीं–

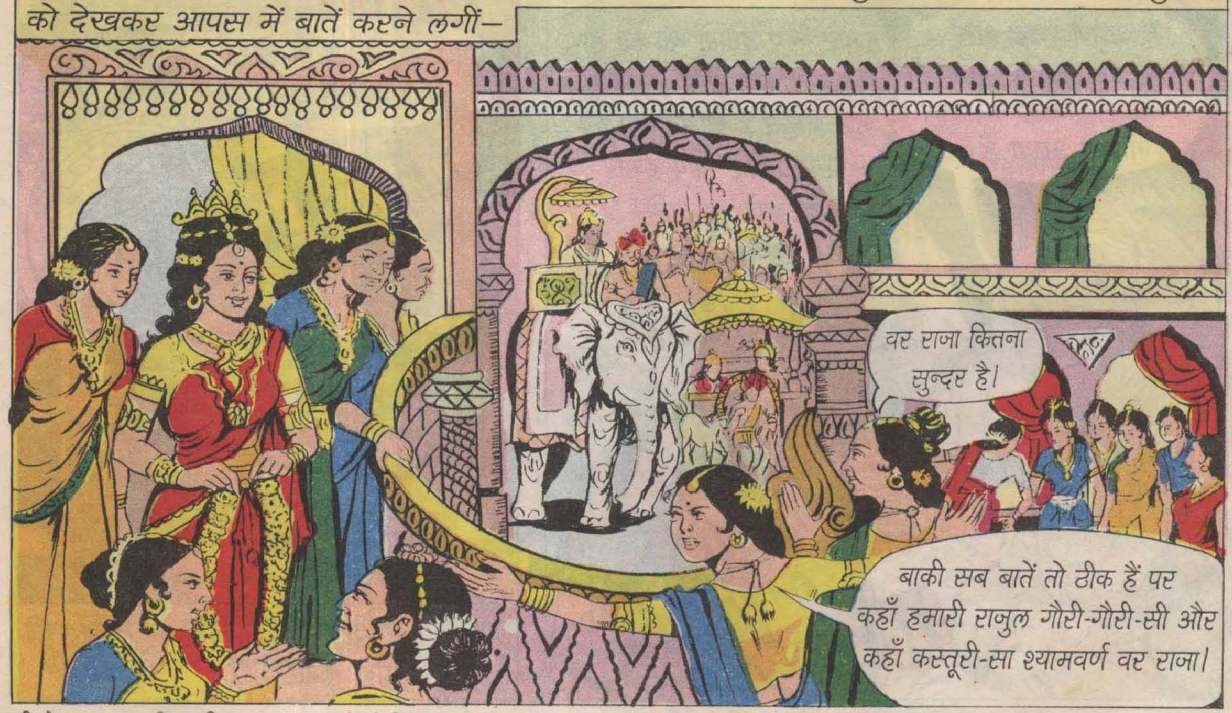

श्री हेमचन्द्राचार्यकृत त्रि. श. पु. च. में नेमिकुमार बारात के रथ में बैठकर चलने का कथन है, किन्तु उत्तराध्ययन सूत्र अ. २२ में वासुदेव के गंध हस्ती पर नेमिकुमार आरूढ़ होने का उल्लेख है। यहाँ पर उसी कथन को मान्य रखा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तभी राजुल ने बीच में टोका–

अरी बुद्धू संसार में श्यामलता नहीं होती तो गोरेपन को कौन पूछता? काली कसौटी नहीं होती तो स्वर्ण की परीक्षा कौन करता?

राजुल के उत्तर से दोनों सखियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

जहाँ प्रेम होता है वहाँ सब दूषण-भूषण बन जाते हैं।

विवाह मण्डप के नजदीक पहुँचने पर नेमिकुमार ने देखा। दूर एक बाड़े में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी बँधे हुए आर्त्त पुकार क्रन्दन कर रहे हैं।

सारथि ! हजारों पशु-पक्षी यहाँ बन्द क्यों हैं ? क्यों ये क्रन्दन कर रहे हैं इनकी करुण पुकार से मेरा हृदय दुःखी हो रहा है ?

कुमार ! आपके विवाह में आये हुए मेहमानों के लिए इन पशु-पक्षियों का वध किया जायेगा।

सुनते ही नेमिकुमार जैसे स्थम्भित हो गये।

क्या मेरे निमित्त इन मूक प्राणियों का वध किया जायेगा? नहीं-नहीं! मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। रुको ! यहीं रुक जाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिकुमार भावविह्वल स्वर में बोले–

देखो वह मूक हरिण आँखों में आँसू भरकर पूछ रहा है।

इनके करुण स्वर मेरे कानों में गूँज रहे हैं, मेरा हृदय द्रवित हो रहा है।

स्वामी, हमने आपका क्या अपराध किया, हम निर्दोषों को किसलिए मरवा रहे हो?

सारथि ने अत्यन्त द्रवित कुमार की तरफ देखा–

कुमार ! आप इन पशुओं के लिए इतने चिन्तित न होवें, इनकी तो यही होनहार है।

नेमिकुमार बोले–

नहीं सारथि ! पहले जाओ, बाड़े में बंद इन पशुओं को मुक्त करो, इनके आँसू नहीं देखे जाते। इनकी छटपटाहट मेरे मन में टीस पैदा कर रही है।

सारथि ने हाथी से उतर कर बाड़े का दरवाजा खोल दिया। बंद पशु हिरण, भेड़, बकरियाँ, खरगोश छलाँग मारकर भागने लगे। पशुओं को मुक्त हुआ देखकर नेमिकुमार प्रसन्न हो उठे।

उन्होंने प्रसन्न होकर सारथि को अपने हार, कुंडल आदि आभूषण उतारकर दे दिये और हाथी को वापस द्वारका की तरफ मोड़ लिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथी को वापस जाता देख समुद्रविजय, श्रीकृष्ण आदि ने सामने आकर महावत से पूछा—

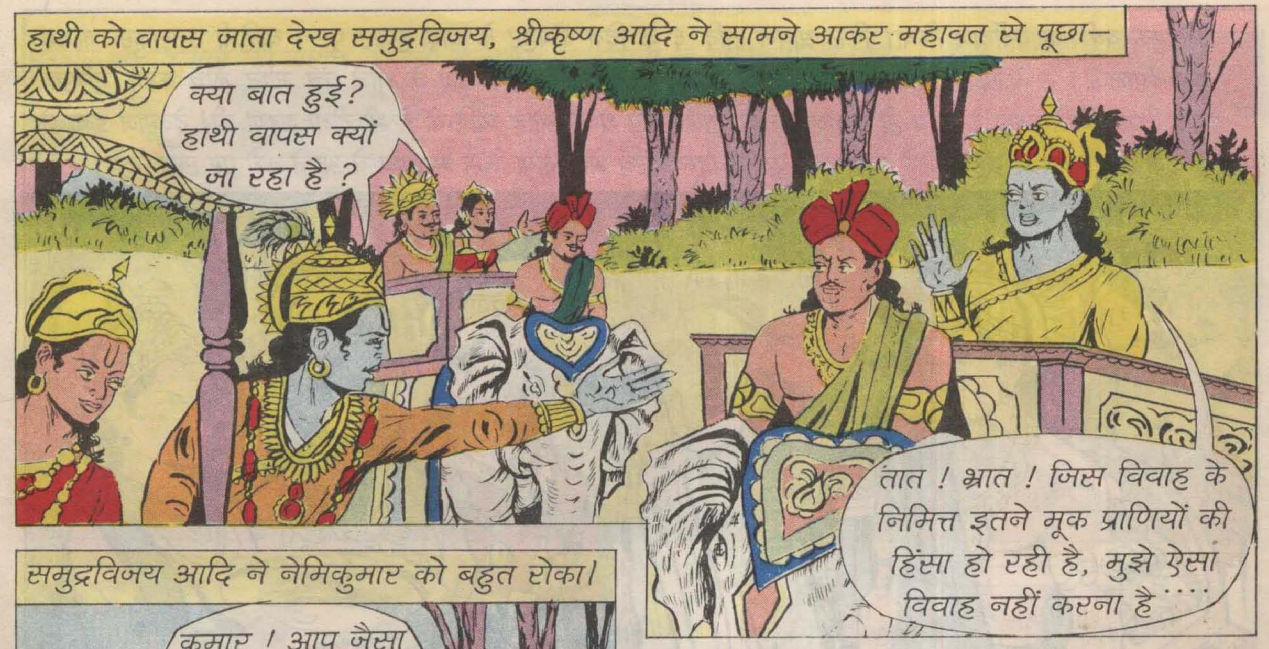

समुद्रविजय आदि ने नेमिकुमार को बहुत रोका।

तब श्रीकृष्ण ने समुद्रविजय आदि को समझाया—

विवाह मण्डप से लौटकर नेमिकुमार द्वारिका वापस आ गये। मन में निश्चय किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्होंने एक वर्ष तक वर्षीदान किया। फिर श्रावण सुदि ६ के दिन दोपहर के बाद हजार पुरुष वाहिनी उत्तराकुरु नामक शिविका (पालकी) में बैठकर रैवतगिरि पर रैवतक उद्यान में पहुँचे। अशोक वृक्ष के नीचे पंच मुष्टि लोचं करके मुनिव्रत स्वीकार किया। नेमिकुमार के साथ ही १ हजार अन्य राजकुमार श्रेष्ठी आदि व्यक्तियों ने भी दीक्षा ग्रहण की। देवराज इन्द्र ने उनके केश स्वर्ण पात्र में ग्रहण किये और उन्हें एक देवदूष्य वस्त्र भेंट किया जिसे भगवान ने अपने कंधे पर रख लिया।

नेमिकुमार ने जैसे ही दीक्षा ग्रहण की उन्हें मन के सूक्ष्म भावों को जानने वाला मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया। समुद्रविजय आदि के साथ वासुदेव श्रीकृष्ण ने नेमि प्रभु की वन्दना की।

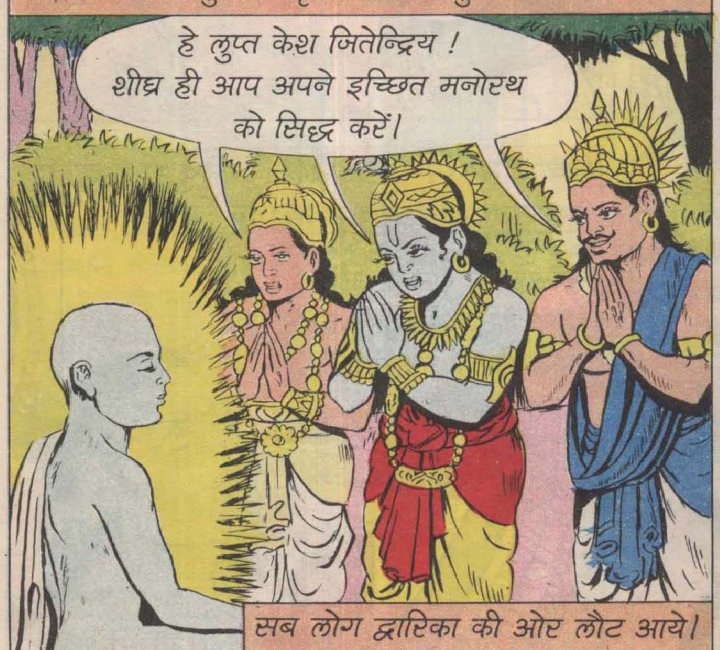

सब लोग द्वारिका की ओर लौट आये।

सौराष्ट्र के विविध क्षेत्रों में ध्यान आदि साधना करते हुए चौवन दिन के पश्चात् वे पुनः उसी रैवतगिरि के शिखर पर पधारे।

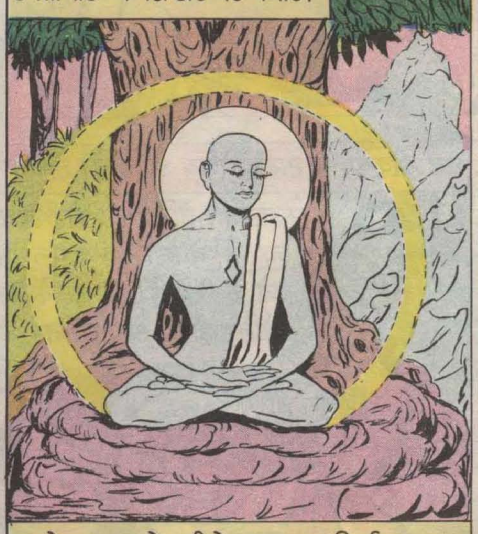

अशोक वृक्ष के नीचे अत्यन्त निर्मल ध्यान साधना में लीन होने पर नेमिनाथ को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

दीक्षा के पश्चात नेमिकुमार नेमिनाथ कहलाये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उधर नेमिकुमार की बरात लौटती देखकर राजीमती ने सखियों से पूछा–

क्या हुआ? क्या हुआ? बरात क्यों जा रही है?

सखियों ने कहा–

राजुल ! सुना है विवाह में पशु-पक्षियों की हिंसा होती जानकर नेमिकुमार नाराज होकर लौट गये। अब वे विवाह नहीं करेंगे।

हैं, तोरण पर आकर वापस चले गये मेरे स्वामी ! मुझे मँझधार में छोड़ गये।

कहते-कहते राजीमती मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

सखियों ने शीतल जल छिड़का, हवा की। राजीमती होश में आई। उसने अपना शृंगार उतार दिया, आभूषण फेंक दिये, फूलों की मालाएँ तोड़-तोड़कर उछाल दीं। पागल जैसी पुकारती रही–

मेरे स्वामी ! मुझे छोड़कर कहाँ चले गये? क्या मैं इतनी अभागिनी, पापिनी हूँ कि आपके लायक भी नहीं हूँ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सखियों ने धीरज बँधाया–

राजुल ! रो मतः पिताश्री नेमिकुमार को मनाने गये हैं। मनाकर ले आयेंगे, तुझे जरूर ले जायेंगे।

नहीं, नहीं ! अब वे नहीं आयेंगे ..... अरे ! मुझे उनके चरणों में पहुँचा दो, मैं ही अपने स्वामी को मना लूँगी, और किसी से वे नहीं मानेंगे।

इसी प्रकार रोती आँसू बहाती राजुल एकान्त में बैठकर रैवतगिरि पर्वत की तरफ देखती रहती थी। एक दिन एक सखी ने आकर उसे सूचना दी–

राजुल ! तेरे नाथ अब त्रिलोकीनाथ बन गये। देख असंख्य-असंख्य देव-देवियाँ आकर उनका कैवल्य महोत्सव मना रहे हैं।

एक अज्ञात हर्ष से राजुल का रोम-रोम नाच उठा। उसने वहीं से अपने आराध्य देव को नमस्कार किया–

स्वामी ! सचमुच आपने जो चाहा सो पा लिया। मैं अभी भी मोह में पागल बनी हुई हूँ। वीतरागी से कैसा मोह ! कैसा प्रेम ! मेरे निर्मोही प्रभु, अब मुझे भी वीतरागता का मार्ग बताओ .....

भाव-विभोर हुई राजुल रैवतगिरि की तरफ हाथ जोड़कर बार-बार प्रार्थना करने लगी। उसकी आँखों से हर्ष के आँसू टपकने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सखी ने झकझोरा–

राजुल ! इतनी भावुक मत बन पगली ! चल आज सभी प्रभु के दर्शन करने जा रहे हैं....

हर्ष से पगलाई राजुल राजपरिवार के साथ रथ में बैठकर रैवतगिरि पर्वत की तरफ चल दी। वह रैवतगिरि के शिखरों को भाव-विह्वल होकर निहारने लगी।

प्रभु ऊपर विराजे धर्म देशना दे रहे होंगे? कितनी मीठी होगी उनकी वाणी ! कैसा आनन्द आ रहा होगा . . . .

रैवतगिरि की तलहटी में रथ रुक गया। पगडण्डी से राजुल बालक की तरह दौड़ती-उछलती चढ़ गई। गिरि शिखर पर भगवान नेमिनाथ का समवसरण लगा था। भगवान अपने आठ भवों की कथा सुना रहे थे। कथा समाप्त होते ही राजीमती आगे आई और प्रार्थना करने लगी–

प्रभु ! आपने नौ भवों की प्रीत पल भर में तोड़ डाली। अब मुझे भी वह मार्ग बताइए ! इस मोह से उबर कर वीतराग भाव में रमण करूँ? मुझे संयम दीक्षा दीजिये।

राजीमती के वैराग्य को देखकर राजा समुद्रविजय वासुदेव श्रीकृष्ण एवं उग्रसेन आदि सभी ने प्रभु से प्रार्थना की।

प्रभु ! इसका हृदय संसार से विरक्त हो गया है। इसे संयम दीक्षा प्रदान करें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभु की स्वीकृति मिलते ही वासुदेव श्रीकृष्ण आदि ने राजीमती का दीक्षा महोत्सव किया। राजीमती ने अपने भँवरे जैसे काले कोमल केशों का हाथ से लुंचन किया। श्वेत वस्त्र धारण कर वह सैकड़ों यादव कन्याओं के साथ प्रभु नेमिनाथ के समक्ष उपस्थित हुई।

आर्या यक्षिणी ने सभी को मुनि दीक्षा प्रदान की।

सर्वप्रथम वासुदेव श्रीकृष्ण ने राजीमती को शिक्षा दी–

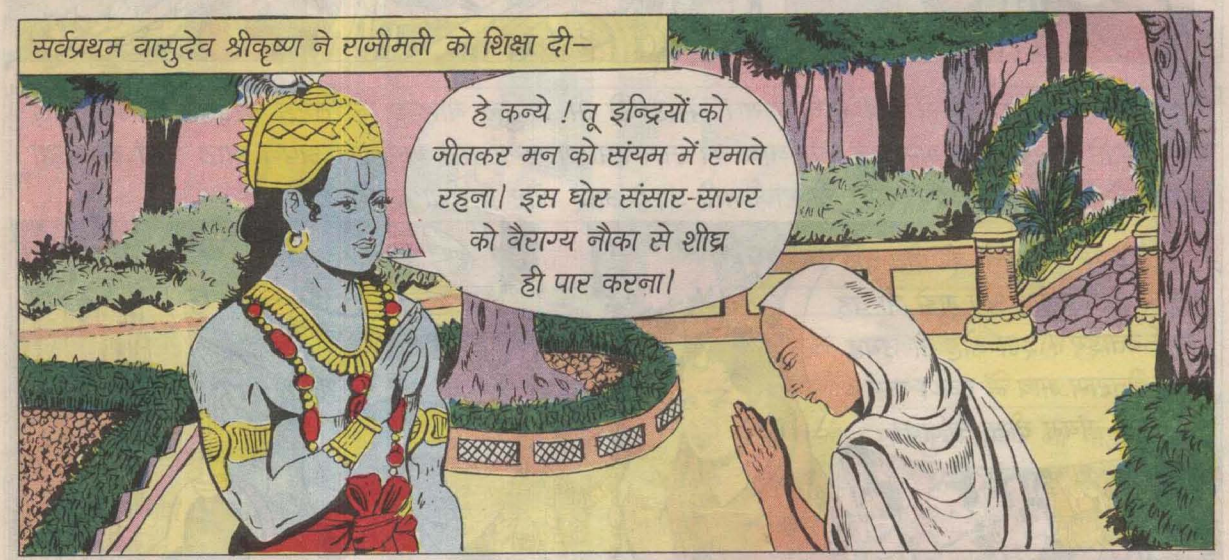

कुमार रथनेमि भी इसी समय भगवान के समक्ष उपस्थित हुआ–

प्रभु की स्वीकृति मिली। कुमार रथनेमि भी मुनि बनकर रैवतगिरि की गुफाओं में तप-ध्यान करने चले गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकबार साध्वी राजीमती अनेक साध्वियों के साथ भगवान नेमिनाथ की वन्दना करने रैवतगिरि पर चढ़ रही थी। अचानक आकाश में काले-काले बादल गड़गड़ाने लगे। बिजलियाँ चमकने लगीं। सांय-सांय करती तेज हवा के साथ वर्षा की तेज बौछारें आने लगीं।

साध्वियाँ तूफानी वर्षा से बचने के लिए पर्वत की गुफाओं में इधर-उधर आश्रय खोजने लगीं। राजीमती अपने समूह से बिछुड़ कर अकेली रह गई। उसने देखा–सामने एक गुफा है। वह उसी गुफा में आकर खड़ी हो गई। गुफा भीतर में बहुत गहरी थी। राजीमती ने सोचा–

इधर-उधर देखा, दूर-दूर तक अँधेरा था। राजीमती ने अपनी शाटिका सुखाने के लिए फैलायी। उसी गुफा में रथनेमि ध्यानस्थ खड़े थे। बादलों की गड़गड़ाहट से उनका ध्यान टूट गया, वे ऊपर बाहर देखने लगे। अचानक बिजली चमकी तो सामने ही वस्त्र उतारती राजीमती खड़ी दिखाई दी। राजीमती को देखते ही रथनेमि का मन डोल गया। मन का हाथी बेकाबू हो उठा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुबारा बिजली चमकी तो राजीमती ने भी देखा, सामने कोई श्रमण खड़ा है। उसने तुरन्त गीली साड़ी शरीर पर लपेट ली। और हाथ-पाँव सिकोड़कर अंगों को छुपाती हुई भयभ्रान्त हरिणी-सी एक तरफ बैठ गई।

कोई श्रमण खड़ा है।

रथनेमि का उद्भ्रान्त मन बेकाबू हो उठा था। उसने कहा–

हे सुरूपे, डरो मत ! मैं रथनेमि हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, स्नेह करता हूँ, तेरे बिना मेरा जीवन व्यर्थ हो रहा है, आओ, इस सुहावने मौसम में हम यौवन का आनन्द लेवें।

राजीमती सहम कर छुपने की चेष्टा करती हुई बोली–

रथनेमि। रुक जाओ ! आगे मत बढ़ना ! धिक्कार है तुम्हें, जो बड़े भाई का वमन पीना चाहते हो.... उज्ज्वल वृष्णि कुल में जन्म लेकर भी कौवे, कुत्ते की तरह त्यागी हुई वस्तु का भोग करना चाहते हो....?

रथनेमि के पाँव थम गये। वह स्तब्ध खड़ा पुकारने लगा–

सुन्दरी ! भाग्य ने आज यह अवसर दिया है। आओ, इस अवसर का आनन्द लो . . .

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजीमती ने कहा—

मूर्ख ! मैं तुम्हारे जैसे वासना के कीड़ों को छूना भी नहीं चाहती.... अगन्धन कुल में जन्मा सर्प जलती अग्नि में मरना पसन्द करता है। परन्तु उगला हुआ विष वापस नहीं पीता। तुम्हें सौ-सौ धिक्कार है, जो त्यागे हुए भोगों की पुनः इच्छा करते हो....? ऐसे पतित जीवन से तो मृत्यु श्रेष्ठ है...

राजीमती के तीखे तेज वचनों ने रथनेमि के मन को झकझोर दिया। जैसे अंकुश से हाथी का मद उतर जाता है। वैसे ही रथनेमि के मन पर से वासना का नशा उतर गया। दूर खड़े-खड़े ही उसने जोर से ध्वनि की—

मुझे धिक्कार है। धिक्कार है।

और वह वापस संयम में स्थिर हो गया।

तब तक वर्षा थम चुकी थी। राजीमती गुफा से बाहर निकली और साध्वियों के साथ भगवान नेमिनाथ की वन्दना करने रैवतगिरि शिखर पर चढ़ने लगी।

रथनेमि भी भगवान नेमिनाथ के चरणों में पहुँचा, प्रार्थना करने लगा—

भन्ते ! मेरा मन मोह ग्रस्त होकर निर्लज्ज हो गया। मैंने राजीमती जैसी महान् साध्वी को अप्रिय अभद्र वचन कहकर कष्ट पहुँचाया, मुझे प्रायश्चित्त दीजिये प्रभु !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभु ने रथनेमि से कहा–

रथनेमि ! अपने दुश्चरण के प्रति पश्चात्ताप और ग्लानि होना ही सबसे बड़ा प्रायश्चित्त है। तुम तप करो, ध्यान करो, इसी से वासना का क्षय होगा . . . . मोह नष्ट होगा।

राजीमती ने भी अनेक वर्षों तक साधना करके कर्मों का क्षय किया और मोक्ष पद प्राप्त किया।

मुनि रथनेमि भी तप-ध्यान में लीन हुए निर्वाण को प्राप्त हुए।

भगवान नेमिनाथ सौराष्ट्र आदि जनपदों में विचरते हुए अन्त में रैवतगिरि पर्वत पर पधारते हैं। आषाढ़ सुदि अष्टमी के दिन एक मास के संथारा पूर्वक भगवान ने निर्वाण प्राप्त किया।

समाप्त

आधार; उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २२ त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र, पर्व ८, सर्ग ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
प्रकाशन सूची

प्र. सं.	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
1.	कल्पसूत्र सचित्र	सं. म. विनयसागर	200.00
3.	प्राकृत स्वयं शिक्षक	डॉ. प्रेमसुमन जैन	15.00
5.	स्मरण कला	अ. मोहन मुनि	15.00
6.	जैनागम दिग्दर्शन	डॉ. मुनि नगराज	20.00
7.	जैन कहानियाँ	उ. महेन्द्र मुनि	4.00
8.	जाति स्मरण ज्ञान	उ. महेन्द्र मुनि	3.00
10.	गणधरवाद	म. विनयसागर	50.00
11.	Jain Inscriptions of Rajasthan	Ramvallabh Somani	70.00
12.	Basic Mathematics	Prof. L. C. Jain	15.00
13.	प्राकृत काव्य मंजरी	डॉ. प्रेमसुमन जैन	16.00
14.	महावीर का जीवन सन्देश	काका कालेलकर	20.00
15.	Jain Political Thought	Dr. G. C. Pandey	40.00
16.	Studies of Jainism	Dr. T. G. Kalghatgi	100.00
17.	जैन, बौद्ध और गीता का साधना मार्ग	डॉ. सागरमल जैन	20.00
18.	जैन, बौद्ध और गीता का समाज दर्शन	डॉ. सागरमल जैन	16.00
19-20.	जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, भाग 1, 2	डॉ. सागरमल जैन	140.00
21.	जैन कर्म-सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	14.00
22.	हेम-प्राकृत व्याकरण शिक्षक	डॉ. उदयचन्द जैन	16.00
23.	आचारांग चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
24.	वाक्पतिराज की लोकानुभूति	डॉ. के. सी. सोगानी	12.00
25.	प्राकृत गद्य सोपान	डॉ. प्रेमसुमन जैन	16.00
26.	अपभ्रंश और हिन्दी	डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन	30.00
27.	नीलांजना	गणेश ललवानी	12.00
28.	चन्दनमूर्ति	गणेश ललवानी	20.00
29.	Astronomy and Cosmology	Prof. L. C. Jain	15.00
30.	Not Far From The River	David Ray	50.00
31-32.	उपमिति-भव-प्रपंच कथा, भाग 1, 2	स. म. विनयसागर	150.00
33.	समणसुत्तं चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	30.00
35.	जैन धर्म और दर्शन	गणेश ललवानी	9.00
37.	दशवैकालिक चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
38.	Rasaratna Samucchaya	Dr. J. C. Sikdar	15.00
39.	नीतिवाक्यामृत (English also)	डॉ. एस. के. गुप्ता	100.00
41.	गीतमगस : एक परिशीलन	सं. म. विनयसागर	15.00
42.	अष्ट-पाहुड चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	20.00
44.	वज्जालग्ग में जीवन मूल्य	डॉ. के. सी. सोगानी	20.00
45.	गीता चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	30.00
46.	ऋषिभाषित सूत्र (English also)	सं. म. विनयसागर	100.00
47-48.	नाड़ी विज्ञान एवं नाड़ी प्रकाश	जे. सी. सिकदर	30.00
50.	उववाइय सुत्तम् (English also)	गणेश ललवानी	100.00
51.	उत्तरज्झयण चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
52.	समयसार चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	16.00
53.	परमात्मप्रकाश एवं योगसार चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	10.00
55.	अर्हत् वन्दना	म. चन्द्रप्रभसागर	3.00
56.	राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द, भाग 1	पं. झाबरमल शर्मा	75.00
57.	आनन्दघन चौवीसी	भंवरलाल नाहटा	30.00
58.	देवचन्द्र चौवीसी	अ. प्र. सज्जनश्री	60.00
59.	सर्वज्ञ कथित परम सामायिक धर्म	विजयकलापूर्णसूरि	40.00
61.	गाथा सप्तशती	डॉ. हरिराम आचार्य	100.00
62.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, प्रथम भाग	गणेश ललवानी	100.00
63.	Yogashastra	E. Surendra Bothara	100.00
64.	जिन भक्ति	अ. भद्रंकरविजय गणि	30.00
65.	सहजानन्दघनचरियम्	भंवरलाल नाहटा	20.00
66.	आगम युग का जैन दर्शन	डी. डी. मालवणिया	100.00
67.	खरतर गच्छ दीक्षा नन्दी सूची	भंवरलाल नाहटा, सं. मं. विनयसागर	50.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

70.	प्राकृत धम्मपद (English also)	सं. डॉ. भागचन्द जैन	150.00
71.	नालाडियार (Tamil, English, Sanskrit, Hindi)	सं. म. विनयसागर	120.00
72.	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	सं. म. विनयसागर	10.00
73.	पुनर्जन्म का सिद्धान्त	डॉ. एस. आर. व्यास	50.00
74.	समवाय सुत्तं	म. चन्द्रप्रभसागर	100.00
75.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	म. चन्द्रप्रभसागर	10.00
76.	जैन साहित्य में श्रीकृष्ण चरित	म. राजेन्द्र मुनि शास्त्री	100.00
77.	त्रिशष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 2	गणेश ललवानी	60.00
78.	राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द, भाग 2	पं. झाबरमल शर्मा	100.00
79.	त्रिशष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 3	गणेश ललवानी	100.00
80.	दादा दत्त गुरु कॉमिक्स	म. ललितप्रभसागर	5.00
81.	भक्तामर : एक दिव्य दृष्टि	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	51.00
82.	दादागुरु भजनावली	सं. म. विनयसागर	150.00
83.	जिनदर्शन चौबीसी (सचित्र)		50.00
84.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 4	गणेश ललवानी	80.00
85.	Saman Suttam, Part 1	Dr. K. C. Sogani	65.00
86.	Jainism in Andhra Pradesh	Dr. Jawaharlal Jain	450.00
87.	रथनेमि अध्ययन (English also)	डॉ. बी. के. खडबडी	20.00
89.	उपमिति भव प्रपंच कथा (मूल)	सं. विमलबोधिविजय	200.00
90.	मध्य प्रदेश में जैन धर्म का विकास	डॉ. मधूलिका बाजपेयी	130.00
92.	बरसात की एक रात	गणेश ललवानी	45.00
93.	अरहंत शब्द दर्शन	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	100.00
94.	योग प्रयोग अयोग	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
97.	Jainism in India	Ed. Ganesh Lalwani	100.00
98.	ज्ञानसार सानुवाद (English also)	गणि मणिप्रभसागर	80.00
99.	विज्ञान के आलोक में जीव-अजीव तत्त्व	सं. कन्हैयालाल लोढ़ा	40.00
100.	ज्योति कलश छलके	म. ललितप्रभसागर	40.00
101.	जैन कथा साहित्य : विविध रूपों में	डॉ. जगदीशचन्द्र जैन	100.00
102.	नीलकेशी	प्रो. ए. चक्रवर्ती	100.00
104.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 5	गणेश ललवानी	120.00
105.	जैन आचार : सिद्धान्त और स्वरूप (English also)	आ. देवेन्द्र मुनि	300.00
106.	सकारात्मक अहिंसा	सं. कन्हैयालाल लोढ़ा	110.00
107.	द्रव्य विज्ञान	डॉ. साध्वी विद्युतप्रभा	80.00
108.	अस्तित्व का मूल्यांकन	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
109.	दिव्यद्रष्टा महावीर	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	51.00
110.	जैन धर्म का यापनीय सम्प्रदाय	डॉ. सागरमल जैन	100.00
112.	श्री स्वर्णगिरि जालोर	भंवरलाल नाहटा	60.00
113.	Philosophy and Spirituality of Shrimad Rajchandra	Dr. U. K. Pungalia	180.00
114.	कल्याण मन्दिर (यन्त्र विधान सह)	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00

मुद्रणाधीन ग्रन्थ

88.	प्रवचनसारोद्धार (हिन्दी अनुवाद)	अ. साध्वी हेमप्रभा
96.	पंचदशी एकांकी संग्रह	गणेश ललवानी
103.	तिरूक्कुरल (तमिल, अंग्रेजी, हिन्दी)	
111.	वैराग्यशतक (पद्मानन्द संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी)	

चित्रकथाएँ

1.	किस्मत का धनी धन्ना	2.	मेघकुमार की आत्मकथा	3.	युवायोगी जम्बूकुमार
4.	राजकुमार श्रेणिक	5.	नमोकार मंत्र के चमत्कार	6.	सती अंजना सुन्दरी
7.	भगवान मल्लीनाथ	8.	भगवान अरिष्टनेमि (मुद्रणाधीन)	9.	क्षमादान
10.	सिद्धचक्र के चमत्कार	(प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 17.00 रुपया)			
11.	करुणानिधान भगवान महावीर (1, 2)	(पुस्तक क्रम 11 का मूल्य 34.00 रुपया मात्र)			

पुस्तक-प्राप्ति स्थान–

प्राकृत भारती अकादमी

3826, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जयपुर-302 003 (राज.)
फोन : 561876

13-ए, कैलगिरि हॉस्पिटल रोड,
मालवीय नगर, जयपुर-302 004
फोन : 523356

तथा– **दिवाकर प्रकाशन,** ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. फोन : 351165

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोचिए ? आपका मन क्या कहता है

पशु खाता है केवल पेट भरने के लिए
मूर्ख खाता है केवल स्वाद के लिए
चतुर खाता है आरोग्य और शक्ति के लिए
सन्त खाता है केवल साधना के लिए

यदि आप स्वयं को चतुर समझते हैं तो भोजन पेट में डालने से पहले एक क्षण सोचिए :

★ क्या यह प्राकृतिक भोजन है ?

★ किसी प्राणी के अपवित्र खून-माँस और चर्बी की गंदगी तो इसमें नहीं मिली है ?

★ किसी जीव की हत्या से निर्मित भोजन आपके पेट में जाकर हिंसा, क्रूरता और प्रतिहिंसा की ज्वाला तो पैदा नहीं करेगा ?

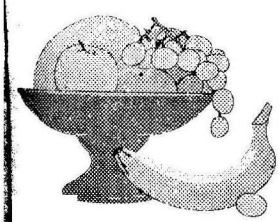

शाकाहार है - स्वास्थ्य का आधार
शाकाहार है - स्वच्छता का विचार
शाकाहार है - शान्ति का संसार

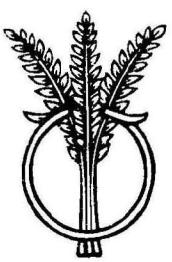

निवेदक :

शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के सूत्रधार-

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

"नयनतारा", सुभाष चौक, जलगांव--425 001

फोन : 23903, 25903, 27322, 27268

गंदी वस्तु पेट में डालकर पेट को कूड़ादान और मन को नरक मत बनाइये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्व में अद्वितीय एवं जैनों का महान तीर्थ

तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय पर्वत

(पालीताना - गुजरात)

अध्यात्मयोगी भक्ति रस निमग्न
पूज्य आचार्य श्री विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म. सा. के शिष्य रत्न
प्रवचनकार पूज्य मुनिवर श्री पूर्णचन्द्र विजय जी म. सा. आदि के
वि. सं. २०५२ गुन्टुर (आन्ध्र प्रदेश) में श्री गुन्टुर जैन संघ के
तत्त्वावधान में हुए भव्य चातुर्मास में सामुदायिक
श्री शत्रुंजय तप की पावन स्मृति में . . . .

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org